महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक महत्व

भारत के लोग भगवान शिव को ***मुक्तेश्वर और पापकटेश्वर*** मानते हैं। भारत में यह मान्यता है कि भगवान शिव ***आशुतोष*** हैं अर्थात् जल्दी और सहज ही प्रसन्न हो जाने वाले हैं और ***अवढरदानी*** भी हैं अर्थात् सहज ही वरदान देने वाले हैं। इसी भावना को लेकर वे शिव पर जल चढ़ाते और उनकी पूजा करते हैं; परंतु प्रश्न उठता है कि जीवन-भर भगवान शिव की आराधना करते रहने पर तथा हर वर्ष श्रद्धापूर्वक शिवरात्रि पर जागरण, व्रत इत्यादि करने पर भी मनुष्य के पाप और सन्ताप क्यों नहीं मिटते, उसे सदाकाल की सुख-शांति क्यों नहीं प्राप्त होती? आखिर भगवान शिव को प्रसन्न करने की सहज विधि क्या है? शिवरात्रि का वास्तविक महत्व क्या है? हम शिवरात्रि कैसे मनायें और महाशिव का रात्रि के साथ क्या संबंध है?

महाशिवरात्रि- सारी मानवता के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण त्यौहार है। 'रात्रि' का अर्थ है रात या अँधेरा। रात्रि में देखना कठिन हो जाता है और अपने लक्ष्य को पाने के लिए भटकते रहते हैं। 'रात्रि' इस दुनिया में अत्यधिक अज्ञानता और अनैतिकता की द्योतक है। मनुष्य जीवन बहुत ही तनावपूर्ण है और हर कोई इतना व्यस्त है कि यह भी स्पष्ट रीति से नहीं जानता कि मानवता किस ओर बढ़ रही है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी विकारों ने हर मनुष्यमात्र को अज्ञान रूपी अँधेरे के गिरफ्त में ले रखा है, यह ही है 'रात्रि' अर्थात अज्ञानता की रात्रि। अज्ञान अंधकार की वह रात्रि सभी मनुष्यमात्र के लिए कल्याणकारी साबित हो जाती है। कैसे? गीता के कथनानुसार "**यदा-2 ही धर्मस्य...(गीता 4/7)** अर्थात ***"जब-2 होय धर्म की ग्लानि, बढ़े असुर-अधम अभिमानी, तब-2 लेत प्रभु मानुष शरीरा।"*** 'महाशिवरात्रि पर्व' मनुष्य ईश्वर के अवतरण की खुशी में मनाते हैं; परंतु उस ईश्वर को जानते नहीं हैं। उसका तो तुरीया जन्म है, हम मनुष्य आत्माओं की तरह वो जन्म नहीं लेता है। जिसके लिए गीता में आया है - **"प्रवेष्टुम"(गीता 11/54)**, मैं प्रवेश करने योग्य हूँ। प्रवेशनीय अर्थात् दिव्य जन्म लेता हूँ। "ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश" अर्थात् जब काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी विकारों की गिरफ्त में मनुष्य फँस जाते हैं, जब मनुष्य अधर्म को ही धर्म समझने लगते हैं, ऐसी घोर रात्रि में भगवान आ करके हमें ज्ञान की रोशनी देकर जगाता है, जिसकी यादगार में शिवरात्रि के दिन **जागरण** करते हैं अर्थात् अज्ञान की नींद से जागना। महाशिवरात्रि के दिन खास तीन पत्तों वाले बेलपत्र का महत्व होता है, जिसे भगवान शिव पर चढ़ाया जाता है। **बेलपत्र की तीन पत्तियाँ** त्रिमूर्ति शिव के तीन कार्यकर्ता ब्रह्मा, विष्णु और शंकर की यादगार हैं। इन 33 कोटि देवताओं में सर्वोच्च तीन मूर्तियों द्वारा भगवान शिव प्रैक्टिकल में विश्व कल्याण हेतु कार्य कराते हैं अर्थात् ब्रह्मा द्वारा दैवी दुनिया की स्थापना, शंकर द्वारा पुरानी आसुरी दुनिया का विनाश और विष्णु द्वारा दैवी दुनिया की पालना। इस दिन मनुष्य उपवास करते हैं; उप माना नज़दीक, वास माना बैठना अर्थात् प्रेम और श्रद्धापूर्वक भगवान के निकट होना ही वास्तविक **उपवास** है। भक्तिमार्ग में तो हम एक दिन उपवास कर लेते हैं अर्थात् एक दिन प्रेम से भक्ति-पूजा-पाठ कर उनके निकट रहते हैं, जिससे मन को कुछ क्षणों के लिए शांति की प्राप्ति हो जाती है। यदि हम साकार में आए हुए भगवान के वास्तविक स्वरूप को जान लेते हैं तो सदाकाल भगवान के निकट रहकर अखूट सुख-शांति की प्राप्ति कर सकेंगे।

शंकर को ही शांतिदेवा कहा जाता है। जिसके द्वारा सारी दुनिया में शांति स्थापन हो जाती है। वही इस सृष्टि का 'प्रथम पुरूष' है, जिसे गीता में कहा है-**"त्वमादिदेव पुरुष: पुराण:..... " (गीता 11-38)**| वो मात्र हिन्दू धर्म से ही संबंधित है, ऐसे नहीं है, उसका गायन और मान्यता हर धर्म में है- मुसलमानों में आदम, क्रिश्चियन में एडम और जैनियों में आदिनाथ के रूप में जाना जाता है। शिव-शंकर भोलेनाथ के अवतरण की यादगार में ही आज हम सब महाशिवरात्रि मनाते हैं। शिव+शंकर भोलेनाथ के अवतरण को जानने के लिए संपर्क करें- आध्यात्मिक विश्वविद्यालय मो.नं. 9891370007 **Website-www.pbks.info Youtube-AIVV**